सी.बी मैकफर्सन C B MCPHERSON
1911 – 1987

प्रमुख रचनाएँ – Real world of Democracy.
POSSESSIVE INDIVIDUALISM.
CREATIVE LIBERTY.
Democratic Theory Essays in Retrieval 1973.

POSSESSIVE INDIVIDUALISM – स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद – मैकफर्सन ने मौलिकता: पूँजीवाद में कुछ सकारात्मक तत्वों का मिश्रण करके नकारात्मक उदारवाद और नकारात्मक स्वतंत्रता की ही रक्षा की क्योंकि इसने इसकी आलोचना की है उसके अनुसार आरंभिक उदारवाद में मनुष्य को जब अपनी आत्मा और शरीर पर सम्प्रभु माना गया था तब वास्तव में उसके स्वयं पर मालिकाना हक को ही स्वीकार किया गया था।

इस दृष्टि से उदारवाद का आरम्भिक विचार सम्पत्ति का विचार है और इस प्रकार व्यक्ति स्वयं स्व सम्पत्ति है और व्यक्ति स्वयं इस सम्पत्ति का मालिकाना हक रखता है – इसे ही मैकफर्सन ने Possessive – मालिकाना व्यक्तिवाद कहा। हिन्दी में मालिकाना व्यक्तिवाद, अधिकारवादी व्यक्तिवाद, स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद सब एक ही हैं Possessive Individualism. इसकी निम्न विशेषताएँ हैं –

1 – व्यक्ति अपनी आत्मा और शरीर पर सम्प्रभु है। अत: अपने शारीरिक श्रम को जिस प्राकृतिक वस्तु से मिला देता वह उसकी सम्पत्ति है। इसमें समाज का कोई योगदान नहीं है। अत: समाज को इसपर कोई प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार भी नहीं है।

2 – अपने शरीर और आत्मा पर सम्प्रभु होने के नाते व्यक्ति अपना मालिक स्वयं है और वह उस पर मालिकाना हैसियत रखता है। इसलिए यही स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद है।

3 – स्वत्व की अवधारणा प्रतियोगी पूँजीवाद को प्रोत्साहित करती है।

Dr. S.HUSAIN

4. इस दृष्टि से स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद राजनीतिक नहीं बल्कि, आर्थिक दर्शन बन जाता है। क्योंकि इसका मूल आधार पूंजीवाद है।

स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद श्रम और पूंजी दोनों को सम्पत्ति मानता है।

6. किन्तु श्रम सम्पत्ति के पूंजी से अलगाव के कारण शोषण न केवल उत्पन्न होता है बल्कि तीव्र भी होता है।

सृजनात्मक स्वतंत्रता – CREATIVE LIBERTY. मैकफर्सन स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद की आलोचना इस कारण करता है कि वह स्वतंत्रता की गलत अवधारणा पर आधारित है। यह स्वतंत्रता "मालिकाना हक" की अवधारणा पर आधारित है। मैकफर्सन के अनुसार सच्ची स्वतंत्रता है "सृजनात्मक स्वतंत्रता"।

मैकफर्सन के अनुसार व्यक्ति की शक्ति के दो आधार होते हैं :-

1. दोहन शक्ति – EXTRACTIVE POWER
2. विकासात्मक शक्ति – DEVELOMENTAL POWER

1. दोहन शक्ति – Possessive Individulism में इसका प्रयोग अधिकतम होता है। इसमें व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की क्षमता का अधिकतम दोहन करता है। इसमें पूंजी निर्णायक होती है। इसी स्तर पर श्रम और पूंजी का अलगाव होता है और शोषण चक्र तीव्र होता है।

2. विकासात्मक शक्ति – यह व्यक्ति की सृजनात्मक शक्तियों पर आधारित होती है। इसका आर्थिक विकास या मानवीय विकास से कोई खास सम्बन्ध नहीं होता। इसलिए स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद में यह कुछ खास नहीं होता।

CONCLUSION — इस प्रकार मैकफर्सन के अनुसार स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद सृजनात्मक स्वतंत्रता के अभाव के कारण शोषणकारी पूंजीवादी व्यक्तिवाद है। सृजनात्मक स्वतंत्रता से इसे दूर किया जा सकता है।

Dr. S.HUSAIN

लोकतंत्र पर विचार ON DEMOCRACY —

मैकफर्सन के अनुसार :-

1- उदार लोकतंत्र सच्चा लोकतंत्र नहीं बल्कि पूंजीवादी लोकतंत्र है।
2- क्योंकि इसका जन्म "स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद" से हुआ है।
3- इसी के अनुरूप पूंजीवादी लोकतंत्र में भी मालिकाना प्रवृत्तियां विद्यमान हैं।
4- यह खोखली स्वतंत्रता पर आधारित है।
5- यह खोखली स्वतंत्रता सबका विकास इसलिए चाहती है क्योंकि वह सब लोगों को उपभोक्ता बनाती है।
6- यह लोकतंत्र व्यक्ति की विकासात्मक शक्तियों पर नहीं बल्कि दोहन शक्ति पर आधारित है।

सच्चा लोकतंत्र- तब होगा जब -

1- व्यक्ति के समस्त कार्य उसकी विकासात्मक शक्ति पर आधारित होंगे।
2- विकासात्मक शक्ति के कारण व्यक्ति सारे कार्य 'मालिकाना हक' की भावना के साथ नहीं करेगा।
3- विकासात्मक शक्ति पर आधारित होने के कारण व्यक्ति व्यक्ति सारे कार्य लाभ के नहीं बल्कि सामाजिक दायित्व से करेगा।
4- मैकफर्सन ने ग्रीन और लास्की की भांति लोकतंत्र को नैतिक बताया।

ASSIGNMENT — प्रश्न - मैकफर्सन की प्रमुख रचनाएं बताइए।
प्रश्न - स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद की व्याख्या करें।
प्रश्न - स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद की आलोचना मैकफर्सन ने क्यों की?
प्रश्न - टिप्पणी लिखिए - (A) दोहन शक्ति (B) विकासात्मक शक्ति
प्रश्न - सृजनात्मक स्वतंत्रता की व्याख्या कीजिए।
प्रश्न - लोकतंत्र पर मैकफर्सन के विचार बताइए।
प्रश्न - मैकफर्सन के अनुसार सच्चा लोकतंत्र क्या है?
प्रश्न - स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद की विशेषताएं बताइए।

Dr. S.HUSAIN